श्री चन्द्रप्रभजिन पूजा

चारुचरन आचरन चरन चितहरन चिहनचर।
चंद-चंद-तनचरित, चंदथल चहत चतुर नर।।
चतुक चंड चकचूरि चारि चिदचक्र गुनाकर।
चंचल चलितसुरेश, चूलनुत चक्र धनुरहर।।
चरअचरहितू तारनतरन, सुनत चहकि चिरनंद शुचि।
जिनचंदचरन चरच्यो चहत, चितचकोर नचि रच्वि रुचि।।१ ।।

दोहा

धनुष डेढ़सौं तुङ्ग तन, महासेन नृपनंद।
मातुलछमनाउर जये, थापों चंद जिनन्द।।२।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

(चाल- द्यानतराय कृत नेंदीश्वराष्टक की अष्टपदी तथा होली की ताल में, तथा गरबा आदि अनेक चालों में)

गंगा ह्वदनिरमलनीर, हाटकभृंग भरा।
तुम चरण जजों वरवीर, मेटो जनम जरा।।
श्री चंदनाथदुति चंद, चरनन चंद लगै।
मनवचतन जजत अमंद, आतम ज्योति जगै।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।।१ ।।

चन्दन जल

श्री खंडकपूर सुचंग, केसर रंग भरी।
घसि प्रासुक जल के संग, भव आताप हरी।। श्री चंद...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय भवतापविनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

अक्षत जल

तंदुल सित सोमसमान, सम ले अनियारे।
दिय पुंज मनोहर आन, तुम पदतर प्यारे।। श्री चंद...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

पीले चावल

सुरद्रुम के सुमन सुरंग, गंधित अलि आवै।
तासों पद पूजत चंग, कामविथा जावै।। श्री चंद...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

सफेद मिठाई

नेवज नाना परकार, इन्द्रिय बलकारी।
सो ले पद पूजों सार, आकुलता हारी।। श्री चंद...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

पीली मिठाई

तमभंजन दीप सँवार, तुम ढ़िग धारतु हौं।
मम तिमिरमोह निरवार, यह गुण धारतु हौं।। श्री चंद...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।।६।।

धूप

दसगंध हुतासन माहिं, हे प्रभु खेवतु हौं।
मम करम दुष्ट जरि जाहिं, याते सेवतु हौं।। श्री चंद...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।।७।।

फल

अति उत्तमफल सु मँगाय, तुम गुण गावतु हों।
पूजों तनमन हरषाय, विघन नशावतु हों।। श्री चंद...

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।।८।।

अर्घ

सजि आठों दरब पुनीत, आठों अंग नमों।
पूजों अष्टम जिन मीत, अष्टम अवनि गमों।। श्री चंद...

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।९।।

पंचकल्याणक

कलि पंचम चैत सुहात अली, गरभागममंगल मोद भली।
हरि हर्षित पूजत मातु पिता, हम ध्यावत पावत शर्मसिता।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णापंचम्यां गर्भमंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।१।।

कलि पौष एकादशि जन्म लयो, तब लोकविषै सुख शोक भयो।
सुर ईश जजे गिरशीश तबै, हम पूजत हैं नुत शीश अबै।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां जन्ममंगलप्राप्ताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।२।।

तप दुद्धर श्रीधर आप धरा, कलि पौष ग्यारसि पर्व वरा।
निज ध्यानविषै लवलीन भये, धनि सो दिन पूजत विघ्न गये।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णैकादश्यां तपः मंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।३।।

वर केवल भानु उद्योत कियो, तिहुँ लोकतणों भ्रम मेट दियो।
कलि फाल्गुण सप्तमि इंद्र जजैं, हम पूजहिं सर्व कलंक भजे।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णासप्तम्यां केवलज्ञानमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।४।।

सित फाल्गुन सप्तमि मुक्ति गये, गुणवंत अनंत अबाध भये।
हरि आय जजे तित मोद धरे, हम पूजत ही सब पाप हरें।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्लासप्तम्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घं निर्वपामीति स्वाहा।।५।।

जयमाला

हे मृगांक अंकित चरण, तुम गुण अगम अपार।
गणधर से नहिं पार लहिं, तौ को वरनत सार।।१।।

पै तुम भगति हिये मम, प्रेरै अति उमगाय।
तातैं गाऊँ सुगुण तुम, तुम ही होउ सहाय।।२।।

जय चंद्र जिनेन्द्र दयानिधान, भवकानन-हानन दवप्रमान।
जय गरभजनममंगल दिनन्द, भवि-जीव विकाशन शर्म कन्द।।३।।

दशलक्षपूर्व की आयु पाय, मनवाँछित सुख भोगे जिनाय।
लहि कारण है जगतैं उदास, चिंत्यो अनुप्रेक्षा सुख निवास।।४।।

तित लौकांतिक बोध्यो नियोग, हरि शिविका सजि धरियो अभोग।
तापैं तुम चढ़ि जिनचंदराय, ताछिन की शोभा को कहाय।।५।।

जिन अंग सेत सितचमर ढार, सित छत्र शीस गल गुलक हार।
सित रतन जड़ित भूषण विचित्र, सित चन्द्रचरण चरचैं पवित्र।।६।।

सित तनद्युति नाकाधीश आप, सित शिविका कांधे धरि सुचाप।
सित सुजस सुरेश नरेश सर्व, सित चितमें चिंतत जात पर्व ॥११॥

सित चंद्र नगरतै निकसि नाथ, सित वन में पहुँचे सकल साथ।
सितशिला शिरोमणि स्वच्छछाँह, सित तप तित धारयो तुम जिनाह ॥१८॥

सित पयको पारण परम सार, सित चंद्रदत्त दीनों उदार।
सित करमें सो पयधार देत, मानों बांधत भवसिंधु सेत ॥१९॥

मानों सुपुण्य धारा प्रतच्छ, तित अचरज पन सुर किय ततच्छ।
फिर जाय गहन सित तप करंत, सित केवल ज्योति जग्यो अनन्त ॥१०॥

लहि समवसरणरचना महान, जाके देखत सब पाप हान।
जहँ तरु अशोक शोभै उतंग, सब शोक तनो चूरै प्रसंग ॥११॥

सुर सुमन वृष्टि नभतें सुहात, मनु मन्मथ तज हथियार जात।
बानी जनमुखसौं खिरै सार, मनु तत्त्व प्रकाशन मुकुर धार ॥१२॥

जहं चौंसठ चमर अमर ढुरंत, मनु सुजस मेघ झरि लगिय पतन्त।
सिंहासन हैं जहँ कमल जुक्त, मनु शिव सरवरको कमलशुक्त ॥१३॥

दुंदुभि जित बाजत मधुर सार, मनु करमजीत को हैं नगार।
सिर छत्र फिरे त्रय श्वेत वर्ण, मनु रतन तीन त्रय ताप हर्ण ॥१४॥

तन प्रभातनों मंडल सुहात, भवि देखत निज भव सात सात।
मनु दर्पण द्युति यह जगमगाय, भविजन भव मुख देखत सुहाय ॥१५॥

इत्यादि विभूति अनेक जान, बाहिज दीखत महिमा महान।
ताको वरणत नहिं लहत पार, तो अन्तरंग को कहै सार ॥१६॥

अनअंत गुणनिजुत करि विहार, धरमोपदेश दे भव्य तार।
फिर जोग निरोधि अघातिहान, सम्मेदथकी लिय मुक्तिथान ॥१७॥

'वृन्दावन' वन्दत शीश नाय, तुम जानत हो मम उर जु भाय।
तातैं का कहौं सु बार बार, मनवांछित कारज सार सार ॥१८॥

धत्तानन्द छन्द

जय चन्दजिनंदा, आनंदकंदा, भवभय भंजन राजे हैं।
रागादिकद्वन्दा, हरि सब फंदा, मुकुति मांहि थिति साजैं हैं।।१९।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय पूर्णार्घं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द चौबोला

आठों दरब मिलाय गाय गुण, जो भविजन जिनचंद जजैं।
ताके भव भवके अघ भाजैं, मुक्तिसार सुख ताहि सजैं।।२०।।

जमके त्रास मिटैं सब ताके, सकल अमंगल दूर भजैं।
'वृन्दावन' ऐसो लखि पूजत, जातै शिवपुरि राज रजैं।।२१।।

इत्याशीर्वादः।(पुष्पांजलि क्षिपेत्)

श्री चन्द्रप्रभु चालीसा

वीतराग सर्वज्ञ जिन, जिन वाणी को ध्याय।
लिखने का साहस करूं, चालीसा सिर नाय।।
देहरे के श्री चन्द्र को, पूजों मन वच काय।
ऋद्धि सिद्धि मंगल करें, विघ्न दूर हो जाय।।

जय श्री चन्द्र दया के सागर, देहरे वाले ज्ञान उजागर।
शांति छवि मूरति अति प्यारी, वेष दिगम्बर धारा भारी।।
नासा पर हैं दृष्टि तुम्हारी, मोहिनी मूरति कितनी प्यारी।
देवों के तुम देव कहावों, कष्ट भक्त के दूर हटावो।।

समन्तभद्र मुनिवर ने ध्याया, पिंडी फटी दर्श तुम पाया।
तुम जग में सर्वज्ञ कहावो, अष्टम तीर्थंकर कहलावो।।
महासेन के राजदुलारे, मात सुलक्षणा के हो प्यारे।
चन्द्रपुरी नगरी अति नामी, जन्म लिया चन्द्रप्रभु स्वामी।।

पौष बदी ग्यारस को जन्में नर नारी हरषे तब मन में।
काम क्रोध तृष्णा दुखकारी, त्याग सुखद मुनि दीक्षा धारी।।
फाल्गुन बदी सप्तमी भाई, केवल ज्ञान हुआ सुखदाई।
फिर सम्मेद शिखर पर जाके, मोक्ष गए प्रभु आप वहां से।।